“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D. Synopsis)

शोधकर्ता

माधव सोपानराव गायकवाड

(M.A.B.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक

प्रोफेसर रामकृष्ण बदने

(M.A.M.Phil.Ph.D.SET)

हिंदी विभाग

ग्रामीण महाविद्यालय, वसंतनगर

तालुका मुखेड, जिला नांदेड.

शोधकेंद्र

हिंदी विभाग

पीपल्य महाविद्यालय, नांदेड

जुलाई 2021

“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रम	शीर्षक	पृष्ठांक
1.	भूमिका (Introduction)	3
2.	विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation)	5
3.	अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objective)	5
4.	अनुसंधान की पध्द्तियाँ (Research Methods)	6
5.	अनुसंधान कार्य के शीर्षक (Title of Research Work)	6
6.	अनुसंधान कार्य (Research Work)	7
7.	अनुसंधान का महत्व (Importance of Research)	10
8.	**परिशिष्ट (Appendix)** (अ) सहाय्यक ग्रंथ सूची (आ) संदर्भ ग्रंथ सूची (इ) शब्दकोश (ई) डॉ.काज़ी ज़र्रा का परिचय	14

“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन

1. प्रथम अध्याय : व्यंग्य विधा का उद्‌भव एवं विकास
2. द्वितीय अध्याय : महाराष्ट्र के हिन्दी व्यंग्यकारों का परिचय
3. तृतीय अध्याय : डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. चतुर्थ अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा का व्यग्य साहित्य
5. पंचम अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा : व्यग्य साहित्य के विविध आयाम
6. षष्ठ अध्याय : डॉ. काज़ी ज़र्रा व्यंग्य साहित्य की भाषा शैली
7. सप्तम अध्याय : उपसंहार

सहाय्यक ग्रंथ सूची
संदर्भ ग्रंथ सूची
शब्दकोश
डॉ.काज़ी ज़र्रा का परिचय

“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन

1. भूमिका (Introduction) :

आज साहित्य में व्यंग्य विधा को स्वतंत्र विधा मान लिया गया है। समाज की विसंगतियों, भ्रष्टाचार, सामाजिक शोषण अथवा राजनीति के गिरते स्तर की घटनाओं पर अप्रत्यक्ष रूप से व्यंग्य किया जाता है। साधारण तथा लघु कथा की तरह संक्षेप में घटनाओं पर व्यंग्य होता है, जो हास्य नहीं कभी-कभी आक्रोश भी पैदा करता है। विद्वानों के अनुसार प्राचीन काल से ही साहित्य में व्यंग्य की उपस्थिति मिलती है। चार्वाक के ‘यावद जीवेत सुखं जीवेत’ के माध्यम से स्थापित मूल्यों के प्रति प्रतिक्रिया को इस दृष्टि से समझा जा सकता है। सर्वाधिक प्रामाणिक व्यंग्य की उपस्थिति कबीर साहिब के ‘पात्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार’ तथा ‘तां चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा भया खुदाय’ आदि के रूप में देखी जा सकती है।

हास्य और व्यंग्य में अंतर है। साहित्य की शक्तियों अभिधा, लक्षणा, व्यंजना में हास्य अभिधा यानी सपाट शब्दों में हास्य की अभिव्यक्ति के द्वारा क्षणिक हँसी तो आ सकती है, लेकिन स्थायी प्रभाव नहीं डाल सकती । व्यंजना के द्वारा प्रतीकों और शब्द-बिम्बों के द्वारा किसी घटना, नेता या विसंगितयों पर प्रतीकात्मक भाषा द्वारा जब व्यंग्य किया जाता है, तो वह चिर स्थायी प्रभाव डालता है। व्यंग्य श्रेष्ठ साहित्य की जान है, या यूं कह सकते हैं कि, जो भी कहानियॉं, उपन्यास, कविता आदि साहित्यिक स्तर पर श्रेष्ठ मानी गई हैं, उनमें व्यंग्य की रोचक तथा शालीन भाषा का प्रयोग है। व्यंग्य सहृदय के भीतर संवेदना, आक्रोश एवं संतुष्टि का संचार करता है।

व्यंग्य साहित्य का इतिहास काफी गहरा और पुराना है । स्वतंत्रता पूर्व व्यंग्य लेखन की सुदीर्घ परंपरा की एक लंबी लेखक सूची है। भारतेंदु हरिशचंद्र, महावीर प्रसाद चतुर्वेदी, बालकृष्ण भट्ट तथा अन्य लेखकों ने एक बहुत बड़ा लेखक समूह संगठित किया था। इनमें बाबू बालमुकुंद गुप्त के धारावाहिक ‘शिव शंभु के चिट्ठे’ युगीन दिग्दर्शक हैं। व्यंग्य से रचना चिरस्थायी बनती है। आजादी के पश्चात सामाजिक सरोकारों से संबंधित अनेक श्रेष्ठ लेखकों के नाम हैं। इनमें हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को एक नई धार दी और व्यंग्य के प्रति जो उपेक्षा भाव था, उसे साहित्य की श्रेष्ठ विधा के रूप में अपनी रचनाओं के द्वारा प्रमाणित किया। लेखकों की कई पीढ़ियों ने लेखन में योगदान दिया है- हरिशंकर परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णुनागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, विष्णुनागर, सूर्यकांत व्यास, डॉ. काज़ी ज़र्रा आदि असंख्य लेखक हैं, जिन्होंने व्यंग्य लेखन को नया स्वरूप दिया है।

आधुनिक युग में व्यंग्य साहित्य की एक सशक्त धारा विद्यमान है, जो हरिशंकर परसाई से आरंभ होकर शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णुनागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, विष्णुनागर, सूर्यकांत व्यास, डॉ. काज़ी ज़र्रा आदि से होती हुई आज तक पहुंची है।

डॉ. अब्दुल सत्तार अब्दुल गफ्फार 'ज़र्रा' जी का जन्म 26 अगस्त, 1965 को कलम जिला उस्मानाबाद, महाराष्ट्र में एक गरीब परिवार में हुआ। घर की आर्थिक विपन्नावस्था के बावजूद वे पढ़ाई करते रहे। इनकी प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा कलम में, स्नातकीय शिक्षा दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर में तथा स्नातकोत्तर शिक्षा मराठवाड़ा विश्वविद्यायल, औरंगाबाद में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही इनका काव्य-व्यतिव प्ललवित होने लगा था। इन्होंने हास्य-व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से अपने साहित्य कों अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। घर की आर्थिक अवस्था बिकट होने के कारण इन्होंने अपने जीवन में अनेक दु:ख को भोगा है। अर्थात इनका साहित्य भोगा हुआ यथार्थ है। उन्होंने अपने आस-पास की अनेक विसंगतियों, बुराइयों को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से अपने व्यंग्य साहित्य को केन्द्र बनाया है। निष्कर्ष: यही कहा जा सकता है कि, डॉ. ज़र्रा परिस्थिति से जूझे परंतु उस परिस्थिति के सामने उन्होंने घुटने नहीं टेके, अपितु कठीन परिस्थिति का डटकर सामना किया। इन सब प्रतिकुल स्थितियों को चुनौती रूप में स्वीकार करने की एक जिद इनमें रही। जहॉं चुनौतियों का सामना करने की जिद्द होती है, वहॉं सफलता खुदबखुद आती है।

महाराष्ट्र के वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ.काज़ी ज़र्रा के दर्जनों व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। प्राय: प्रत्येक पत्र-पत्रिका में व्यंग्य सामग्री आज समय की आवश्यकता समझी जा रही है। व्यंग्य साहित्य के आगे सामाजिक चुनौतियॉं भी कम नहीं हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि, व्यंग्य के वर्ण्य-विषय नकारात्मक, दलीय और पत्रों की प्रतिबद्धता के कारण सामाजिक भेदभाव एवं विघटन को हवा दे रहे हैं। अंधविश्वासों, रूढियों, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य तो उचित है, किंतु किसी एक जाति, एक धर्म, राष्ट्रीय नायकों, त्यौहारों आदि पर घृणापूर्ण व्यंग्य समाज में सौहार्द स्थापित नहीं कर सकता।

साहित्य लेखन में व्यंग्य शैली, व्यंग्य भाषा एवं हास्य की अनिवार्यता रहेगी, क्योंकि व्यंग्य विधा साहित्य का प्राण है। महाराष्ट्र में एक बहुत बड़ा वर्ग व्यंग्य लेखन से जुड़ा है। निकट भविष्य में व्यंग्य की धार और भी पैनी होती जाएगी। पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य सामग्री छपती है, किंतु स्वतंत्र व्यंग्य पुस्तकें कम ही छप पाती हैं। महाराष्ट्र में व्यंग्य लेखकों की कमी नहीं है, लेकिन व्यंग्य पुस्तकों के लेखक उंगलियों पर गिनाए जा सकते हैं।

2. विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation) :

व्यंग्य की उत्पत्ति के संबंध में कहा जाता है कि, 'वि+अंग' के योग से 'व्यंग्य' शब्द की निष्पत्ति हुई है। "हिंदी भाषा एवं साहित्य में प्रचलित 'व्यंग्य' शब्द संस्कृत भाषा से ही आया है। 'वि' उपसर्ग एवं 'णयत'

प्रत्यय 'अज्ज' के योग से 'व्यंग्य' बनता है। इस शब्द का प्रयोग शक्तियों के अंतर्गत ही हुआ है,इसी लिए शब्दकोशों में प्रचलित अर्थ इसी से संबंधित है।" हिंदी शब्द सागर तथा नालंदा विशाल शब्द सागर में प्रचलित अर्थ के अतिरिक्त 'ताना' या 'चुटकी' के रूप में भी व्यंग्य का अर्थ लिया जाता है। 'बृहत हिंदी कोश' में व्यंग्य का व्यंजना वृत्ति द्वारा बाधित सांकेतिक, संकेतार्थ, अर्थ दिया गया है।

हिंदी के अग्रणी व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के अनुसार व्यंग्य की परिभाषा इस तरह से दी है,"व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।" केशवचंद्र वर्मा के अनुसार व्यंग्य की परिभाषा, "मानव व्यापार के व्यापक संदर्भ में कथनी और करनी का भेद सहज ही व्यंग्य को जन्म देता रहता है।"

व्यंग साहित्य भी समाज का दर्पण है। समाज में जो अच्छा एवं बुरा होता है, व्यंगकार उसे अपने व्यंग साहित्य में स्थान देता है। समाज में जिस व्यवस्था की तत्कालीन समय में आवश्यकता होती है,उस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए भी व्यंग साहित्य की रचना की जाती है, अथवा किसी विशेष कार्य के लिए ऐसे विशेष विषय का चयन किया जाता है। आज हमारा समाज अपने संस्कारों, मानवीय मूल्यों एवं देश के प्रति अपने कर्तव्यों को भूलता जा रहा है। राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं सेवा इमानदारी का भाव आज अति आवश्यक है। इसी चेतना को प्रकाश में लाने के लिए इस विषय का चयन किया गया। डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों से सराबोर है। मैंने हाली में उनका 'ज्यूतों का हार' हास्य व्यंग रचना पढ़ लिया है, इस हास्य व्यंग में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना दिल को छू लेने वाली है। वैसे देखा जाए तो मुझे उनका 'ज्यूतों का हार' हास्य व्यंग इतना अच्छा लगा कि,अन्य व्यंग रचना को भी पढ़ने की जिज्ञासा मन मे निर्माण हुई। और मैनें सोचा की क्यों न पीएच-डी. शोध कार्य के लिए मैं डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग साहित्य का अध्ययन करूं। बस यही बात मैंने मेरे मार्गदर्शक डॉ. डॉ रामकृष्ण बदने सर से कहा, डॉ. काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' वे मेरे अच्छे परिचित थे, उनका व्यंग साहित्य बहुत ही हास्यास्पद है। मैने उनके साहित्य को करीब से देखा है और उनके व्याख्यान भी सुने है काफ़ी प्रसिध्द वक्ता, साहित्यकार है। और तुरंत मुझसे कहा कि, हॉं बहुत सही व्यंगकार थे। आज के युग में नई हास्य व्यंग चेतना को उन्होंने अपने ढंग से कहा है। मेरी तरफ से तो उनके व्यंग साहित्य पर शोधकार्य के लिए अनुमती है। डॉ. रामकृष्ण बदने सर से चर्चा के उपरान्त उनके सहयोगी मित्र डॉ. रावसाहेब जाधव, डॉ. सय्यद शौकत, डॉ. प्रदीप सुर्यवंशी, सविता किर्ते, डॉ. अब्दुल रज़्जाक कासार सर से कई बार बातचीत के बाद "हिन्दी व्यंग्य साहित्य को महाराष्ट्र का अवदान" (डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के विशेष संदर्भ में) पर शोध कार्य करना निश्चित हुआ।

“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन

हिन्दी गद्य व्यंग्य का इतिहास लगभग डेढ़-सौ साल पुराना है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से व्यंग्य की धारा निरन्तरता से विकासमान है। व्यंग्यकारों और उन्हीं के बीच पनपे व्यंग्यालोचकों के अथक परिश्रम से व्यंग्य एक लोकप्रिय विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। सनातन मानवीय कुप्रवृत्तियों एवं विसंगतियों पर हर युग में वक्रोक्ति, व्याजस्तुति, ताना, चुटकी आदि शैलियों में प्रहार हुआ है। तथापि स्वातंत्र्योत्तर काल में जो उर्वर भूमि व्यंग्य के लिए उपलब्ध हुई है, उसका कोई सानी नहीं। सन 60 के बाद की विकृत स्थितियों ने तो साहित्यकारों को विसंगतियों के खिलाफ सक्रीय योगदान के लिए उकसाया है। इस युग ने हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवीन्द्रनाथ त्यागी, शंकर पुणतांबेकर, डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ आदि जैसी शीर्षस्थ प्रतिभाएँ हिन्दी व्यंग्य जगत को प्रदान की।

समाज के लिए हानिकारक, आपत्तिजनक प्रवृत्तियाँ, विचारधाराएँ व्यंग्य का लक्ष्य होती हैं। इस दृष्टि से स्वस्थ, सुन्दर और भव्यतर जीवन निर्माण का वह एक साधन है। इसी साधन से डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ की साधना अखण्ड रूप से जारी है। उनका रुझान उन्हें अन्य समकालीन व्यंग्यकारों से अलगाता है। उनकी रचनाओं में स्थित बौद्धिकता, गंभीरता की प्रधानता उन पर परसाई के प्रभाव को परिलक्षित करती हैं। परसाई उनके आदर्श रहे हैं, परंतु उन्होंने केवल उनका अनुकरण नहीं किया है, तो चुस्त और विदग्ध कथ्य के प्रयोग से एक छोटी रचना में भी विसंगतियों के वैविध्य को साध कर अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी विविधांगी रचनाओं को देखते हुए एहसास होता है कि, उनके साहित्य की समीक्षा के लिए व्यंग्य के नये-नये प्रतिमानों की आवश्यकता है। डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ केवल व्यंग्यकार ही नहीं तो व्यंग्य समीक्षक भी हैं। अपने तर्क संगत विचारों को उदाहरणों के साथ समझाकर उन्होंने व्यंग्य के विधा पन पर बड़े आत्मविश्वास के साथ मुहर लगाई है। उनकी कुछ रचनाएँ दुरूह जरूर हैं, परंतु दुर्हता के बावजूद एक बार उनकी तलब लगने पर दूसरा कुछ भाता भी नहीं है। अतः मैंने डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ जी के साहित्य पर शोध करना अपना परम सौभग्य समझा है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुलभता हेतु छ अध्यायों में विभक्त किया है। विषय प्रवेश के अंतर्गत शोध की प्रेरणा, शोध की आवश्यकता, शोध का औचित्य, शोध संबंधी पूर्ववर्ती कार्य, शोध की सीमा और शोध प्रविधि को प्रस्तुत किया गया है।

3. अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objective) :

“डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार ‘ज़र्रा’ के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन इस अनुसंधान कार्य के पीछे मेरे अहम् उद्देश्य है, जो इस प्रकार है।

1. डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' जी की दृष्टि से सत्ता और संपत्ति साधन है, साध्य है मूल्यवाद। अत: उनकी अपनी जीवनशैली तथा रचनाधर्मिता के सिध्दांतों में विरोधाभास नहीं हैं।
2. उन्होंने व्यंग्य को फुटकर रुप से आगे बढ़ाते हुए एकांकी, नाटक एवं उपन्यास के रुप में ढालकर उसका अधिक विस्तार किया है।
3. उन्होंने व्यंग्य को शैली तत्व से आगे बढ़ाते हुए विधा के रुप में स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया है।
4. डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' जी ने प्रसिध्दि से दूर रहकर निर्भीकता से छत्रपति शिवाजी महाराज की बातें कही, जिनमें प्रखर राष्ट्राभिमान, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, उपभोक्तावादी विलासी जीवनशैली के प्रति आक्रोश, अन्याय के प्रति विद्रोह और शोषित आदमी को न्याय दिलाने की छटपटाहट दिखाई देती है।
5. उनकी रचनाओं में कथ्य के विस्तार की अपेक्षा वैचारिकता को अधिक स्थान हैं। अत: रचनाओं की तहर संक्षिप्त है। अनुशीलन से उनमें निहित आशय, बिहारी के दोहे की तरह 'गागर में सागर' जैसा प्रतीत होता है। उन्होंने अपने स्वानुभूत शिक्षा एवं साहित्य जगत की विसंगतियों का लेखा-जोखा जिस तरह प्रस्तुत किया है, उसी तरह साहित्यकारों तथा अध्यापकों में होने वाली लोकमंगल की दृष्टि, साहित्य, शिक्षा के प्रति आत्मीयता को भी उजागर किया है।
6. उनके व्यंग्य साहित्य में प्रसंगो अवतरण, पात्रों की व्यथाओं की अभिव्यक्ति में गहराई, मूल्योन्मुख आस्था के स्वर गूँजते है।
7. आज भी अपना समाज शोषित-पीड़ित है। इसी पीड़ित प्रवृत्तियों को व्यंग्य के माध्यम से परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
8. रचनाकारों की भाषा मूलत: स्वानुभूत सत्य है। इस भाषा की विशेषताएँ तथा भाषा-शैली को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

इस दृष्टि से "हिन्दी व्यंग्य साहित्य को महाराष्ट्र का अवदान" (डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के विशेष संदर्भ में)का व्यापक परिचय देना तथा कुछ रहस्यों को खोलना ही मेरे शोधकार्य का मूल लक्ष्य रहा है।

इनके साहित्य में व्यंग्य का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। ऐसी ही व्यंग्य का परिवेश हम पर भी प्रभाव डालता है, जो हमारे ही अनुभवों से जुड़ जाता है। मेरा उदेश्य और लक्ष्य व्यंग्य से संबंध को अवगत कराना है। इस दृष्टि से मुझे इस विषय पर शोधकार्य करने का निश्चिय किया है।

4. अनुसंधान की पध्द्तियॉं (Research Method) :

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण कर पड़ता है । इसलिए शोध कार्य की

व्यापकता को देखकर मैंने **"डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन** को निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है। जैसे अध्ययन-अध्यापन पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार प्रश्नावली पद्धति तथा निष्कर्ष पद्धति आदि का सहारा लिया है।

5. अनुसंधान कार्य के शीर्षक: (Research Work of Titel):

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इस शोधकार्य **"डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन** को निम्नांकित अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है।

1. प्रथम अध्याय : व्यंग्य विधा का उद्‍भव एवं विकास
2. द्वितीय अध्याय : महाराष्ट्र के हिन्दी व्यंग्यकारों का परिचय
3. तृतीय अध्याय : डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. चतुर्थ अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा का व्यंग्य साहित्य
5. पंचम अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा : व्यंग्य साहित्य के विविध आयाम
6. षष्ठ अध्याय : उपसंहार

अंत में उपसंहार के बाद निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है और परिशिष्ट में, आधार ग्रंथ, मूल ग्रंथ एवं पत्रपत्रिकाओं की सूची दी गई है।

6. अनुसंधान कार्य (Research Work) :

हिन्दी कथा साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है । अत: इसी विस्तार को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित शोध-कार्य में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार **"डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन**को आधार बनाकर विषय के रूप में चयन किया गया है। उपर्युक्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत अनुसंधान कार्य निम्नलिखित शीर्षक के आधार पर किया गया है। जहॉ तक मेरा विचार है इस विषय पर अभी तक विस्तृत शोध कार्य नहीं हुआ है।

प्रथम अध्याय : व्यंग्य विधा का उद्‍भव एवं विकास :

इस अध्याय के अंतर्गत व्यंग्य का अर्थ, व्यंग्य की परंपरा, व्यंग्य की विविध अवधारणाएँ, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास, व्यंग्य के लक्षण, व्यंग्य की विशेषताएँ, हास्य और व्यंग्य, व्यंग्य की सीमा, व्यंग्य का साहित्यिक महत्त्व को विवेचित किया है। व्यंग्य विधा के विकास को स्पष्ट करते हुए इस विधा को चार भागों में विभाजित किया गया हैं

1. भारतेन्दु युगीन व्यंग्य साहित्य - 1850-1900
2. स्वातन्त्रपूर्व व्यंग्य साहित्य - 1900-1947
3. स्वातन्त्रोत्तर व्यंग्य साहित्य - 1947-1960

4. स्वायत्त व्यंग्य विधा साहित्य - 1960- से अब तक।

यंग्य को स्वायत्त व्यंग्य विधा के रुप में स्थापित करने में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रविन्द्रनाथ त्यागी, केशवचंद्र सेन, श्रीलाल शुक्ल, डॉ. नरेन्द्र कोहली, के.पी सक्सेना, लतीफ घोंघी, डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, डॉ. संसारचंद्र, अमृतराय, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, श्री.लाल पांडेय डॉ. काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' आदि का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इनका भी प्रारम्भिक व्यंग्य राजनीतिक, प्रशासन, साहित्यिक, सामाजिक क्षेत्र से सम्बन्ध रहा। आज इनके एक दर्जन से अधिक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित है।

व्दितीय अध्याय : महाराष्ट्र के हिन्दी व्यंग्यकारों का परिचय :

इस अध्याय समकालीन हिन्दी व्यंग्य लेखन में डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' का स्थान के अंतर्गत समकालीन व्यंग्यकारों के साथ महत्वपूर्ण है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर का जन्म 26 मई 1925 को मध्यप्रदेश के गुणा जिले में कुंभराज गाँव में दक्खिनी- महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ । भले ही इनका जन्म मध्यप्रदेश हुआ हो किंतु परिवार की रहन-सहन यह महाराष्ट्रीयन ही है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर जी हरिशंकर परसाई, शरद जोशी से प्रभावित हैं किंतु अपनी सूक्तिबध्द सामासिक शैली से व्यंग्य-जगत में चर्चित रहे हैं।

तृतीय अध्याय : डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

इस अध्याय में डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यक्तिगत जीवन को अधोरेकित किया गया है। जिनमें उनके बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षणों को रेखांकित किया गया है। साथ हि उनके पारीवारिक परिवेश तथा इस परिवेश का उनपर क्या प्रभाव है, इस बात को सूक्ष्मता से स्पष्ट किया गया है।

डॉ.अ. सत्तार अ. गफ्फार 'जर्रा' जी का जन्म 26 अगस्त, 1965 को कलम जिला उस्मानाबाद में एक गरीब परिवार में हुआ। घर की आर्थिक विपन्नावस्था के बावजूद वे पढ़ाई करते रहे। इनकी प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा कलम में, स्नातकीय शिक्षा दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर में तथा स्नातकोत्तर शिक्षा मराठवाड़ा विश्वविद्यायल, औरंगाबाद में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही इनका काव्य-व्यतिव प्ललवित होने लगा था। कवि ने हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य शैली के माध्यम से अपने साहित्य कों अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। घर की आर्थिक अवस्था बिकट होने के कारण इन्होंने अपने जीवन में अनेक दु:ख को भोगा है। अर्थात इनका साहित्य भोगा हुआ यथार्थ है। उन्होंने अपने आस-पास की अनेक विसंगतियों, बुराइयों को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से स्पष्ट किया है।

'ज़र्रा' के पारिवारिक जीवन से लेकर आजीविका व्यवसाय, लेखकीय प्रभाव व प्रेरणा, सम्मान एवं यात्राएँ तथा जीवनानुभूतियों से परिपूर्ण अभिव्यक्तियों के रचना-संसार एवं मृत्यु तक की घटनाओं को विस्तार से उद्घाटित किया गया है। डॉ. काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' ने हिन्दी एवं उर्दू भाषिक है। अनेक

व्यंग्य-स्तंभ लिखे हैं तथा इनके दर्जनों से अधिक पुस्तके प्रकाशित हैं। इस प्रकार व्यंग्य को विधा के रुप में स्थापिक किया गया और उसका विकास आधुनिक काल में अधिक तेजी होता रहा है।

चतुर्थ अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा का व्यंग्य साहित्य :

इस अध्याय में डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' की लेखन प्रक्रिया व रचना दृष्टियों को उद्घाटित करते हुए उनके साहित्यिक प्रदेय को प्रस्तुत करने का प्रयास है। इस अध्याय के अन्तर्गत लेखक द्वारा विरचित विभिन्न साहित्य का सूक्ष्मत: से अध्ययन किया जाएगा तथा उनमें डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' निहित व्यंग्य के विभिन्न तत्त्वों का अध्ययन किया जाएगा, जिसके अन्तर्गत आने वाली सामाजिक चेतना के मुख्य बिन्दुओं, सामाजिक संदेश, जातिवाद का विरोध, सामाजिक जागरूकता व सृजनशीलता, जातिगत संकीर्णता, स्वार्थ के दुष्प्रभाव आदि पर प्रकाश डाला जाएगा। व्यंग्य के अन्तर्गत जिन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक व दार्शनिक आदि तत्त्वों का विवेचन किया जाएगा। इन सबका सम्मिलित रूप ही व्यंग्य चेतना का निर्माण करता है। इसलिए इन सभी पहलुओं पर सूक्ष्मता से विचार किया जाएगा।

काज़ी ज़र्रा का मन संवेदनशील होने के कारण समाज में व्याप्त राजनीतिक-भ्रष्टाचार, असंतोष, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, हिंसा, सास्कृतिक मूल्यों का पतन, बेकारी, अत्याचार, अन्याय, असुरक्षितता आदि को देखकर मन व्याकुल हो उठता है, और वह इसी मन की व्याकुलता को हास्य व्यंग्य का माध्यम बनाकर कविता में अभिव्यक्त करते हैं। डॉ. काज़ी ज़र्रा की 'जूतों का हार' और 'बेदुम का बंदर' ऐसी दो हास्य-व्यंग्यात्मक रचनाएँ वर्तमान सामाजि एवं राजनीतिक वास्तव को प्रकट करती है।

काज़ी ज़र्रा व्यक्तित्व व्यंग्य के रूप में मुखरित हुआ है। कुछ रचनाएँ वर्तमान की यथार्थ व्यवस्था के प्रति तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाली हैं। 'जूतों का हार' में कवि ने विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की नान-ग्राट नीति पर कड़ा प्रहार किया है। इस नान-ग्रांट नीति के कारण अनेक अध्यापकों को वर्षो तक वेतन नहीं मिलता अगर मिलता भी है,तो अत्यल्प, जिससे उनका गुजारा नहीं होता। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ होने के बावजूद वे हीन-ग्रंथि का शिकार हो जाते हैं। इसका प्रभाव विद्यार्थियों के भविष्य पर भी पड़ता है। वर्तमान युग में बुद्धिजीवियों की इस बिकट अवस्था पर कवि कहता है-

"जिंदगी में क्या-क्या नहीं, सहना पड़ रहा है।
बेवकूफों को बादशाह, कहना पड़ रहा है।।
कुत्ते कर रहे हैं, एअर कंडीशन कारों में ऐश।
बुद्धिजीवियों को सड़कों पे सड़ना पड़ रहा है।।"

'बे-दुम का बंदर' यह इनका दूसरा काव्य-संकलन है। इसमें 75 मुक्त पद तथा 28 कविताएँ हैं। चार पंक्तियों वाले इनके मुक्त पद मराठी के प्रचलित चारोळी जैसे लगते हैं। इन चार पंक्तियों के माध्यम से समसामयिक परिवेश पर कवि अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इस प्रतिक्रिया में हास्य-व्यंग्यात्मकता के

माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर कठोर प्रहार किया है। डॉ. जर्रा के पास एक बेचौन मन है। शिक्षा, राजनीति, व्यापार अर्थात् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो अन्याय, अत्याचार है उससे वे क्षुब्ध हो उठते हैं। यह क्षुब्धता या बेचौनी एक संवेदनशील मन की है।

पंचम अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा : व्यंग्य साहित्य के विविध आयाम :

डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य के विविध आयाम अंतर्गत वर्तमान सामाजिक ढाँचा, सामाजिक खूढ़ियाँ, सामाजिक विकास के बाधक तत्त्व, अंधविश्वास, ग्रामीण और शहरी समाज, सामाजिक शोषण के विविध रूप और सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन के परिप्रेक्ष्य में डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य के विविध आयाम की व्यंग्य रचनाओं का अनुशीलन किया गया है।

आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा जहाँ विसंगति नहीं देखी जाती, हर क्षेत्र में विसंगतियाँ पनप रही है । शिक्षा जैसे पतन क्षेत्र में भी विसंगतियाँ अपनी जड़े मजबूत कर रही है। आज शिक्षा संस्थान बलता धंदा बन गया है। आज नए नए स्कूल कालेजों की स्थापना हो रही है। सरकार की ओर से उन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान नहीं किया जाता फिर भी वे ज्यादा प्रमाण में खुल रहे हैं और डोनेशन की बलबुतें पर चल भी रहे हैं। किंतु शिक्षक और शिक्षा स्तर गिरता जा रहा है। यह समुचे राष्ट्र के लिए खतरे की बात है। इस नान-ग्रांट संस्थाओं के कारण शिक्षकों की हालत अत्यंत नाजुक हो गई है। इस संबंध में डॉ. जर्रा लिखते है।

"मैंने जो भूकम्प से पूँछा,
यार तुने मुझे क्यों नही मारा?
भूकम्प बोला, चुप! हम तो जिंदा को मारते है।
तुझे तो पहले ही नान-ग्रान्ट ने मारा,
फिर हम कैसे मार सकते है दुबारा।

यहाँ आर्थिक परिस्थिति खस्ता होने के कारण शिक्षकों की जीने की चाह है खत्म हो रही है इस बात पर प्रकाश डाला है। डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' के राजनीतिक व्यंग्य में भारतीय जनतंत्र का स्वरूप, राजनीति में नीति का लोप, राजनैतिक भ्रष्टाचार, राजनीति और नौकरशाही, चुनाव प्रणाली और उसका परिणाम, सरकार और जनता, नेतृत्त्व की वस्तुस्थिति तथा वर्तमान राजनीति और राष्ट्रीय विकास पर व्यंग्यात्मक प्रहर को विवेचित किया गया है। डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' के आर्थिक व्यंग्य के अंतर्गत भारतीय अर्थतत्र, आर्थिक योजनाएँ और जनता, आर्थिक विकास की बाधाएँ, पूँजी का ध्रुवीकरण, शोषण की विभिन्न स्थितियाँ, जनसाधारण की अवस्था, कुटीर उद्योगों के प्रति की उदासीनता, ग्राम जीवन की आत्मनिर्भरता का हास, शहरी संस्कृति का प्रकोप जैसे बिन्दुओं को केंद्र में रखते हुए उनके द्वारा चित्रित आर्थिक विसंगतियों को गहराई से विश्लेषित करने का प्रयास रहा है।

डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' के धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यंग्य के अंतर्गत धार्मिक खडढ़ियाँ, धर्म और सदाचार, धर्म के मूल तत्त्व, अनुष्ठान धर्मिता का अंधापन, सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन, संस्कृति और संस्कार, सांस्कृतिक चेतना का वस्तुनिष्ठ रेखांकन, सांस्कृतिक मूल्यों के ऱ्हास पर चिन्ता और डॉ.काज़ी 'ज़र्रा' की सांस्कृतिक दृष्टि का विवेचन करते हुए उनके धार्मिक और सांस्कृतिक मंथन को उद्घाटित किया गया है।

षष्ठ अध्याय : डॉ.काज़ी ज़र्रा व्यंग्य साहित्य की भाषा शैली :

इस अध्याय में **डॉ.काज़ी ज़र्रा** के साहित्य की 'भाषा-शैली' का अध्ययन किया जाएगा। प्रत्येक साहित्यकार की अपनी एक शैली होती है। साहित्यकार की अपनी भावानुभूति, संवदेना, विचार आदि का संयोजन कर कल्पना शक्ति द्वारा साहित्य की सृष्टि करता है। उसी प्रकार **डॉ.काज़ी ज़र्रा** जी की भाषा-शैली अनुठी है। वे मूलत: महाराष्ट्र में उनका जन्म हुआ है, तो यहॉ के मिट्‌ठी की भाषा कैसे अवगत नहीं होगी। इसीलिए वे मराठी भाषा के जाने माने वक्ता थे। तथा उनका जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ है, तो उनकी मातृ भाषा उर्दू है, और हिंदी के वे जाने माने विद्वान थे, और साथ में अंग्रेजी के जानकार भी थे। इसीलिए उनके व्यंग्य साहित्य में हिंदी के साथ मराठी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है। वे अपने साहित्य में अनेक भाषा-शैली को बखूबी से प्रयोग करते है। उनके व्यंग्य साहित्य की भाषा भावानुकूल, यथार्थवादी, आंचलिक, संगीतात्मकता, सांकेतिकता, काव्यात्मक, अलंकृत, बिंबात्मक आदि है। जिसके कारण उनकी शैली पाठकों को अभिभूत करती है, तथा कथानक में घटित होने वाले घटनाक्रम के प्रति उत्सुकता को बढ़ाती है। उनके व्यंग्य साहित्य के के शब्द प्रयोग में संस्कृत के प्रचलित तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, ऑंचलिक शब्द, अंग्रेजी के शब्द, उर्दू के शब्द, मराठी के शब्द, प्रतीक, बिम्ब, व्यंग्य, सूक्तियाँ, मुहावरे कहावतों आदि का प्रयोग हुआ है। जिसका अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

सप्तम अध्याय : उपसंहार

उपसंहार इस शोध कार्य का अंतिम अध्याय है, इस अध्याय में सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को सार रुप में प्रस्तुत किया जाएगा। अन्य अध्यायों में वर्णित सम्पूर्ण सामग्री का निचोड़ रखा गया है। अंत में उपसंहार के रुप में सभी अध्यायों के निष्कर्ष निकालकर विश्लेषण ओर अवलोकन किया गया है। उपसंहार के बाद परिशिष्ट में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश और पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी जाएगी।

7. अनुसंधान का महत्व (Importance of Research) :

"डॉ.काज़ी अब्दुल सत्तार 'ज़र्रा' के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन " इस शोध का महत्व यही होगा की वर्तमान परिस्थिति में मानव ने भले ही भौतिक सुख सुविधाए प्राप्त कर ली परंतु आज भी वह आत्मिक समाधान के लिए तरस रहा है। देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम, मानव प्रेम ही उसे आंतरिक समाधान दे सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(अ) आधार ग्रंथ :

1. जूतों का हार, हास्य व्यंग्य, डॉ. ज़र्रा काज़ी
2. वैचारिक कविता संग्रह, इल्म, हास्य व्यंग्य, डॉ. ज़र्रा काज़ी
3. कुछ ऐसे भी सूरज है (उपन्यास), हास्य व्यंग्य, डॉ. ज़र्रा काज़ी
4. ज़र्रा की मधुशाला, हास्य कविता, डॉ. ज़र्रा काज़ी
5. कामयाबी का राज बड़ी सोंच और अक्शन, हास्य व्यंग्य, डॉ. ज़र्रा काज़ी

(आ) संदर्भ ग्रंथ :

1. परसाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ० मनोहर देवालिया, सागर विश्वविद्यालय का अप्रकाषित शोध-प्रबन्ध, 1984 भूमिका।
2. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, हरिशंकर परसाई,
3. स्वातनयोत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, शेरगंज गर्ग, दिल्ली 1972.
4. व्यंग्य का स्वरूप, डॉ० वीरेन्द्र मेहन्दीरता, प्रतिशोध पत्रिका, 1984
5. डॉ. अहमद मोहम्मद जीमल, अंतिम दशक के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण, अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2000
6. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1997
7. डॉ. अस्थाना, हिन्दी कथासाहित्य समकालीन संदर्भ, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा प्र.सं. 1981
8. डॉ. वीरेन्द्र कुमार, हिन्दी उपन्यासों में मार्क्सवादी चेतना, संजय प्रकाशन, दिल्ली: प्र.सं. 1994
9. डॉ. ज्ञानचंद गुप्त, आँचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली: प्र.सं. 1975
10. डॉ. ज्ञानचंद गुप्त,स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. 1974
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, अठारहवां सं. 2005
12. सं. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, अड़तीसवां पुनर्मुद्रण, 2011
13. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, छठवां सं. 2009
14. ब्रह्मस्वरूप शर्मा, हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा, उत्तर प्रदेश, मनु प्रकाशन, प्र.सं. 2000

15. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1981
16. डॉ. महावीर सिंह चौहान, रामदरश मिश्र की सृजन यात्रा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1991
17. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, श्रीलाल शुक्ल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज, नई दिल्ली, 1969

(ई) हिन्दी कोश ग्रन्थ :

1. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी. आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली, 2010
2. मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, राममूर्ति सिंह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1974
3. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. रामचन्द्र वर्मा पष्ठ सं. 2014
4. अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोश, हरदेव डॉ. बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली: सं. 2000
5. हिन्दी साहित्य कोश, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वारणासी, सं. 1985
6. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2018
7. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2009
8. श्यामसुन्दरदास (सं.) हिन्दी शब्द सागर (चौथा भाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2018
9. हरदेव बाहरी, बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 1969
10. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2002

(उ) अंग्रेजी कोश :

1. A new approch Dicionary of living, S-V- Sohani
2. Dictionary of world literature, Shiple
3. Encyclopacdia Britannica, Vol- 19
4. New colligiate Dictionary, Ed- Websters

(ऊ) पत्र-पत्रिकाएँ :

1. आजकल, नई दिल्ली
2. आलोचना, नई दिल्ली
3. इन्द्रप्रस्थ भारती, नई दिल्ली
4. एक और अन्तरीप, जयपुर
5. मधुमती, उदयपुर
6. समालोचक, जयपुर
7. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
8. साहित्य कुंज, कनाडा

9. सृजन कुंज, श्रीगंगानगर

10. नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

(ए) Websites

1. www.books.google.com

2. www.hindiliterature.com

3. www.wikipedia.org/wiki/mausam

4. www.ramdarashmishrablogspot.com

शोधकर्ता
माधव सोपानराव गायकवाड
(M.A.B.Ed.M.Phil.)
हिंदी विभाग
सरस्वती माध्य. व उच्चमाध्यमिक विद्यालय,रामेश्वर,
तालुका जिल्हा, लातूर

शोधनिर्देशक
डॉ. प्रोफेसर रामकृष्ण बदने
(M.A.M.Phil.Ph.D.SET)
हिंदी विभाग
ग्रामीण महाविद्यालय, मुखेड